International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 40-41

आधुनिक काव्य में महिलाओं पर चिंतन

आशा रानी

असिस्टैंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), वैश्य पी.जी. कॉलेज, भिवानी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता के परिवेश और समय का सवाल है, उससे हम भली–भांति परिचित हैं। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं बौद्धिक स्तर पर उत्पन्न होने वाली घटनाओं व चुनौतियों से अपरिचित नहीं हैं। भ्रष्टाचार सभी क्षेत्रों में सुरसामुख की तरह पैर पसार रहा है। सभी क्षेत्रों में अविश्वास छाया हुआ है। महिलाओं के साथ प्रतिदिन अत्याचार, जुल्म, सितम एवं बलात्कार का बाजार गर्म है। नित नये–नये काण्ड देखने–सुनने को मिलते हैं। इस प्रकार हिन्दी कवियों द्वारा कविता के माध्यम से समाज को जागृत करने का यत्न किया गया है। विश्व बाजार में नैतिकता आदि मूल्यों का ह्रास हुआ है। स्त्री जाति को वह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ, जो कि होना चाहिए था। आजकल हमारी सोच में भारी अन्तर आ गया है। हमारे अन्दर नैतिकता समाप्त हो रही है। स्त्री को हम केवल भोग्या समझते हैं जिससे समाज निरन्तर अधोगति को प्राप्त हो रहा है जो कि उचित नहीं है। महिलाओं के उत्थान के लिए समकालीन कवियों ने कविता के माध्यम से अनेक प्रयास किए जो निम्नलिखित है:

परमानन्द श्रीवास्तव लिखते हैं –

> ''हमारे समय के महत्वपूर्ण सरोकारों, सवालों से टकराता एक विशेष रूप और गुणधर्म वाली कविता का चित्र सामने आ जाता है। समकालीन कविता चाहे प्रेम की हो या राजनीतिक स्थिति की या मानवीय संकट की, इतना निश्चित है कि एक खास समय की संवेदना इसके चित्रण के ढंग को ही नहीं, अनुभव के रूप को अथवा प्रकृति को भी प्रभावित करता है।''[1]

समकालीन हिन्दी कवितायें स्त्री जाति के संकटों को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं। समाज की भावनाओं तथा विचारों को बदलने का पूर्ण प्रयास करती हैं। समाज को निर्भया जैसे काण्डों को लेकर संवेदनशील होने की आवश्यकता है। जहाँ कहीं अन्याय, अत्याचार, जुल्म, सितम एवं बलात्कार आदि घटनाएं घटित हों, तो सारे समाज को एकजुट होकर विरोध करना होगा। पूर्ण रूप से संवेदनशील होना पड़ेगा जिससे स्त्री जाति आत्मनिर्भर बन सके।

धूमिल की कविता ''स्त्री'' में उसकी नारी दृष्टि देखी जा सकती है। जहाँ वह नारी को पूंजी और एक वस्तु मानते हैं :

> ''स्त्री
> देह के अन्धेरे में
> बिस्तर की अजाकता है
> स्त्री पुंजी है
> बीड़ी लेकर
> विज्ञापनों में फैली हुई है।''[2]

रघुवीर सहाय की दृष्टि ने नारी को पूर्ण रूप से शोषित माना है। उसकी सभी प्रकार इच्छा–आकांक्षा, भूख, प्यास, प्रसन्नता सब कुछ पुरुष इच्छा पर निर्भर है। उसकी कविता की 'नारी' असहाय एवं बेचारी है। उसका स्वयं चिन्तन–मनन पुरुष की इच्छा पर निर्भर है, स्वावलम्बी नहीं है। वे कहते हैं –

> ''नारी बिचारी
> पुरुष की मारी
> तन से क्षुधित
> मन से मुदित
> लपक झपक कर
> अन्त में चित्त''[3]

समकालीन काव्यों में औरत बिल्कुल निरीह एवं उदासीन सी दृष्टिगोचर होती है। वह स्वच्छन्द होकर विचरण करने में असमर्थ है। शिक्षित होकर सभी क्षेत्रों में उन्नति की ओर अग्रसर हो रही है अपितु पुरुष प्रधान समाज में अपने–आपको असुरक्षित ही समझती है। चन्द्रकान्त देवताले की 'औरत' कविता में औरत की एक घिसी–पिटी दिनचर्या में उसके अस्तित्व की तलाश है :–

> ''वह औरत
> आकाश और पृथ्वी के बीच
> कब से कपड़े पछींट रही है
> पछींट रही शताब्दियों से
> धूप के तार सुखा रही है।
> वह औरत
> आकाश और धूप और हवा में
> कोचित घुप्प की गुहा में।
> कितना आटा गूंथ रही है?
> गूँथ रही है टनों आटा।''[4]

वास्तव में विचारणीय प्रश्न यह है कि औरतों का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक या यूं कहें कि सर्वरूपेण शोषण किया जाता है, जो उसकी दयनीय स्थिति को दर्शाता है। जहाँ औरत होना एक अभिशाप प्रतीत होता है। जहाँ अन्याय–अत्याचार की पराकाष्ठा प्रतीत होती है। भ्रूण हत्यायें की जाती हैं। ऐसी दयनीय शोच अनर्थकारी है। उदय प्रकाश की औरतें कविता में देखा जा सकता है:–

> ''हजारों लाखों छुपती हैं गर्भ के अन्धेरे में
> इस दुनिया में जन्म लेने से इन्कार करती हुई
> वहाँ भी खोज लेती हैं उन्हें भेदिया तरंगें
> और वहाँ भी भ्रूण के अन्धेरे में उतरती है हत्यारी कटार।''[5]

पुरुषों की दृष्टि में नारी के प्रति विशेष बदलाव नहीं आया है लेकिन कवयित्रियों की नारी–दृष्टि में बदलाव आया है। यह बदलाव अति आवश्यक है। आज नारी पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर उन्नति के सोपान पर आरूढ़ है तथापि पुरुषों को पीछे छोड़ रही है। उसने बहुत ऊँचे उठकर पुरुषों को विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है। बन्धनग्रस्त नारी आज विद्रोहिणी का रूप धारण कर चुकी है। अर्थोपार्जन में पुरुष के साथ संघर्षरत है।

अपना अस्तित्व प्राप्त करने के लिए छटपटा रही है। डॉ. शीला रजवार लिखती हैं :–

> ''नारी पुरुष और समाज से कटा हुआ कोई अजूबा भी नहीं है। पुरुष और समाज के बीच इनसे सम्बद्ध होने पर भी वह स्वतन्त्र है। उसे व्यक्तिगत पहचान की जरूरत है। उसमें जीवनी शक्ति है।.... नारी को अब नये परिप्रेक्ष्य में देखना ठीक है। अपेक्षाकृत पुराने–पुराने मूल्यों से जोड़ने के।''[6]

गहन चिन्तन–मनन करने के पश्चात् नारी की स्थिति को बदलने के लिए नारी को मजबूती के साथ खड़ा होना होगा। जब तक स्त्री जाति दृढ़ संकल्प लेकर आशा व विश्वास के साथ नारी जाति के उद्धार के लिए खड़ी नहीं होगी तब तक सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है। समय की पुकार है, आज की आवश्यकता है, हुँकार भर के स्त्री जाति के समस्त क्लेशों को दूर करने के लिए नारी की शक्ति के साथ खड़ा होना नितान्त आवश्यक है। 'लछमी' कविता की 'लछमी' जो चीजों का दर्पण हो / परखती थी / और साफ–साफ बोलती थी, साहस करती है जूझने का – बस में गुण्डे छेड़ रहे थे

> किसी नई ब्याहता को
> लछमी से रहा नहीं गया।
> भिड़ गई उनसे
> कोई गांव का
> उठा नहीं मदद को।''[7]

नारी जन्म ही सुख बरसाने के लिए हुआ है। वह समाज का अभिन्न अंग है। इस शस्य–श्यामला धरा पर सारे संसार को आह्लादित करने के लिए है। वह समाज से कुछ लेती नहीं बल्कि देती है। नारी में वह शक्ति विद्यमान है जिसके द्वारा संसार को सुख से भर देती है, उसके सुरभित सांसों में जीवन का सुखद संगीत सुनाई देता है।

श्री अतुल गोस्वामी ने लिखा है –

> नारी तुम धरती पर सुख बरसाने आई हो।
> सबके जीवने का सम्बल संगीत साथ लाई हो।[8]

नारी का मूल्यांकन उसके गुणों के आधार पर किया जाता है। जिस प्रकार से नदी स्वयं रेत में बहती है तथा अपने अमृतजल के द्वारा संसार का भरण–पोषण करती है। जगत् की प्यास बुझाती है। उसी प्रकार से नारी की भी यही स्थिति है।

इस प्रकार से समकालीन साहित्य में नारी जाति का अच्छी प्रकार से विश्लेषण करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि नारी में अपार गुणों की क्षमता है। हर क्षेत्र में पुरुष की चेतावनी को अंगीकार करके संघर्ष करती प्रतीत होती है। अविरल रूप से आगे बढ़ती जाती है। संवेदनशील है, त्याग, साहस एवं धैर्य उसको शक्ति प्रदान करते हैं। नारी हमें मानवीय चेतना, बुद्धि, स्फूर्ति एवं हृदय अनुराग से आप्लावित करती है। नारी विशाल सुखों का भण्डार है। पूर्ण ऊर्जा के द्वारा अपने कार्य को करती हुई उन्नति के चरम बिन्दु को प्राप्त करने के लिए अग्रसर रहती है। अतः नारी की शक्ति असीम है। अतः नारी शक्ति की संवेदना को प्रणाम।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. परमानन्द श्रीवास्तव : समकालीन हिन्दी कविता, पृ. 13
2. 'धूमिल' 'स्त्री' सुदामा पाण्डेय, प्रजातन्त्र काव्य स॰ से पृ॰ 130
3. रघुबीर सहाय : 'सीढ़ियों पर धूप' काव्य सं॰ से पृ॰ 1
4. परमानन्द श्रीवास्तव : समकालीन तीन हिन्दी कविता, पृ॰ 184
5. लक्ष्मणसिंह चन्द्रिका, पृ॰ 59
6. डॉ. शीला रजवार : स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते संदर्भ, पृ॰ 14
7. ''लछमी'', गंगा तट देखा, पृ॰ 51
8. अतुल गोस्वामी, नारी, पृ॰ 50